कॉमर्स में करियर

आज कॉमर्स की दुनिया संभावनाओं से भरी पड़ी हैं। ग्लोबलाइजेशन के कारण इस क्षेत्र का दायरा तेजी से बढ़ा है। अगर 12वीं के बाद कॉमर्स सब्जेक्ट के साथ आगे बढना चाहते हैं, तो अवसरों की कोई कमी नहीं है। 12वीं के बाद कॉमर्स विषय के स्टूडेंट्स सीपीटी एग्जाम दे सकते हैं। एग्जाम में सफल होने पर चार्टर्ड अकाउंटेट (सीए) की अपनी पढ़ाई जारी रख सकते हैं। चार्टर्ड अकांउटेंसी बेहतरीन कोर्स है और देश में चार्टर्ड अकाउटेंट की डिमांड भी अधिक है। कंपनी सेक्रेटरीज भी कॉमर्स विषय में करियर के लिए एक अच्छा ऑप्शन है। इसके लिए स्टूडेंट्स रजिस्ट्रेशन करवा कर इसकी परीक्षा दे सकते हैं। बीकॉम के साथ कम्यूटर अकाउंटिंग का कोर्स किया जा सकता है। ऑफिशियल सेक्रेट्रीएट के कुछ कोर्सेस भी किए जा सकते हैं। 12वीं या ग्रेजुएशन के बाद बैंकिंग की परीक्षाएं दी जा सकती हैं। सिविल सविर्सेस की परीक्षाएं भी दी जा सकती हैं। हालांकि आज ज्यादातर कॉमर्स स्टूडेंट्स बीकॉम के बाद एमबीए करना ज्यादा पसंद करते हैं। बीकॉम करने के बाद स्टूडेंट्स बैंकिंग और इंवेस्टमेंट्स, एविएशन, मीडिया और डिफेंस, ट्रैवल और टूरिज्म, बीपीओ आदि में भी आवदेन कर सकते हैं। बैंकिंग, इंश्योरेंस, फाइनेंस और अकाउंट्स में काफी अच्छी सैलरी मिल जाती है। कॉमर्स स्ट्रीम के स्टूडेंट के पास करियर के कई विकल्प हैं। बैंकिंग फाइनेंस और कॉमर्स, इंवेस्टमेंट बैंकिंग, फोरेंसिक अकाउंटेंट, फाइनेंशियल एनालिसिस, बैंकिंग म्यूचुअल फंड, चार्टर्ड अकाउंटेंसी (सीए), आइसीडब्ल्यूए, सीएस, बैंक, पॉलिसी एनालिस्ट, टैक्स ऑडीटर और विश्वविद्यालयों एवं डिग्री कॉलेजों में शिक्षक आदि के रूप में जॉब तलाश सकते हैं। आइसीडब्ल्यूए कोर्स करने के बाद चेयरमैन सीइओ/सीएफओ मैनेजिंग डायरेक्टर, फाइनेंस डायरेक्टर, फाइनेंस कंट्रोलर, चीफ अकाउंटेंट, कॉस्ट कंट्रोलर जैसे महत्वपूर्ण पदों पर पहुंच कर पैसों के साथ नाम भी कमा सकते हैं। 12वीं के बाद कॉमर्स में आपके लिए क्या हो सकता है बेस्ट ऑप्शन...

* चार्टर्ड अकाउंटेंट्(C.A.)

इंडस्ट्री में चार्टर्ड अकाउंटेंट्स की डिमांड लगातार बढ़ती जा रही है। हालांकि सीए का काम काफी चुनौतीपूर्ण होता है। यदि आप इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया के तहत संचालित फाइनल कोर्स कम्पलीट कर लेते हैं, तो आपको अकाउंटिंग, ऑडिटिंग, कॉर्पोरेट फाइनेंस, प्रोजेक्ट इवैल्यूएशन, कंपनी व बिजनेज लॉ, टैक्सेशन एवं कॉर्पोरेट गवर्नेंस के क्षेत्रों में अच्छी नौकरी या प्रैक्टिस करने का अवसर मिल सकता है। इसके लिए बारहवीं के बाद साल में दो बार होने वाले 'सीपीटी' यानी 'कॉमन प्रोफेशिएंसी टेस्ट' पास करने के बाद एडमिशन ले सकते हैं। सीपीटी एग्जाम क्लीयर करने के बाद तीन माह की आर्टिकलशिप ट्रेनिंग और सौ घंटे की आईटीटी ट्रेनिंग लेनी होती है और फिर पीसीई यानी प्रोफेशनल कॉम्पिटेंस एग्जाम में शामिल होना पड़ता है। आठ महीने की ऑडिट ट्रेनिंग छह माह की आर्टिकल ट्रेनिंग के बराबर होती है। पीसीई के बाद फाइनल एग्जाम देना होता है। इसे क्लीयर करने के बाद चार्टर्ड के रूप में जॉब या फिर प्रैक्टिस कर सकते हैं।

* कॉस्ट एंड मैनेजमेंट अकाउंटिंग

कॉस्ट एंड मैनेजमेंट अकाउंटिंग के क्षेत्र में माहिर पेशेवर इंवेस्टमेंट प्लानिंग, प्रॉफिट प्लानिंग, प्रोजेक्ट मैनेजमेंट और इससे संबंधित मैनेजरियल निर्णय लेने जैसे अति महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। कॉस्ट एंड मैनेजमेंट अकाउंटिंग से संबंधित कोर्स भारत सरकार की संस्था द इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट एंड वर्क्स अकाउंटेंट्स ऑफ

इंडिया (आईसीडब्ल्यूएआई) संचालित करती है। इसके द्वारा तीन तरह के कोर्स संचालित किए जाते हैं- फाउंडेशन कोर्स, इंटरमीडिएट कोर्स और फाइनल कोर्स। फाउंडेशन कोर्स के लिए न्यूनतम उम्र 17 है। किसी भी विषय से बारहवीं पास या बारहवीं की परीक्षा दे चुका स्टूडेंट्स आवेदन के लिए योग्य माना जाता है। इसकी परीक्षा साल में दो बार-जून और दिसंबर में होती है। आप जिस परीक्षा में भाग लेना चाहते हैं, उससे कम से कम छह माह पहले नामांकन कराना पड़ता है। इंटरमीडिएट कोर्स में ऐसे स्टूडेंट एडमिशन ले सकते हैं, जिन्होंने या तो फाउंडेशन कोर्स पास कर लिया हो या फिर जो किसी मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय से ग्रेजुएट हों। इसमें भी परीक्षा वाले टर्म से कम से कम छह माह पहले प्रवेश लेना होता है। आईसीडब्ल्यूएआई द्वारा संचालित फाइनल कोर्स में वे स्टूडेंट्स ही एडमिशन ले सकते हैं, जिन्होंने इस संस्था से पहले इंटरमीडिएट कोर्स कर रखा है। कोर्स करने के बाद मैन्युफैक्चरिंग, मल्टीनेशनल कंपनी या सर्विस सेक्टर में आसानी से नौकरी मिल जाती है। वैसे, कोर्स के बाद आप भारत सरकार की इंडियन कॉस्ट अकाउंटिंग सर्विस भी ज्वाइन कर सकते हैं या फिर स्वतंत्र रूप से प्रैक्टिस भी कर सकते हैं।

* **कंपनी सेक्रेटरी**

इन दिनों स्टूडेंट्स ऐसे कोर्स को अधिक पसंद कर रहे हैं, जिसमें चुनौती के साथ-साथ आगे बढ़ने का बेहतरीन मौका होता है। ऐसे ही एक कोर्स है-सीएस यानी कंपनी सेक्रेटरी का। इस कोर्स को पूरा करने के बाद कॉर्पोरेट वर्ल्ड में आगे बढ़ने का रास्ता खुस जाता है। दरअसल, किसी भी कंपनी की तरक्की के पीछे कंपनी सेक्रेटरी का काफी बड़ा योगदान होता है। वह बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स, शेयर होल्डर्स, सरकार और दूसरी एजेंसियों के बीच कड़ी का काम करता है। इस कोर्स को करने का मतलब है, एक एेसे फील्ड में कदम रखना, जिसमें न केवल प्रतिष्ठा, बल्कि जॉब सेटिस्फैक्शन भी भरपूर है। सीएस कोर्स कराने वाली देश की एकमात्र संस्था है- द इंस्टीट्यूट ऑफ कंपनी सेक्रेटरीज ऑफ इंडिया। यह संसदीय अधिनियम द्वारा स्थापित संवैधानिक निकाय है, जो भारत सरकार के कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय की देख-रेख में काम करती है। ऐसे स्टूडेंट, जो बारहवीं पास करने के बाद सीएस बनना चाहते हैं, उन्हें कंपनी सेक्रेटरी कोर्स पूरा करने के लिए तीन स्टेज से होकर गुजरना पड़ता है -फाउंडेशन प्रोग्राम, एग्जिक्यूटिव प्रोग्राम और प्रोफेशनल प्रोग्राम। इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया या किसी भारतीय अकाउंटेंसी इंस्टीट्यूट की परीक्षा पास की हो या किसी मान्यता प्राप्त विदेशी संस्थान से इसके समकक्ष परीक्षा पास की हो। सीएस कोर्स में एडमिशन साल में कभी भी लिया जा सकता है। वैसे, फाउंडेशन प्रोग्राम में प्रवेश लेने की अंतिम तिथि हर वर्ष 31 मार्च और 30 सितंबर है। 31 मार्च तक प्रवेश लेने वाले स्टूडेट्स उसी साल दिसंबर में होने वाली परीक्षा में भाग ले सकते हैं, जबकि 30 सितंबर तक एडमिशन लेने वाले स्टूडेंट्स को अगले साल जून महीने में आयोजित होने वाली परीक्षा में भाग लेना होता है। एग्जिक्यूटिव प्रोग्राम में प्रवेश की अंतिम तिथि 28 फरवरी और 31 अगस्त होती है। जो स्टूडेंट्स 28 फरवरी तक एडमिशन ले लेते हैं, वे उसी साल दिसंबर में होने वाली परीक्षा में बैठ सकते हैं, जबकि 31 अगस्त तक एडमिशन लेने वाले स्टूडेंट्स अगले साल जून महीने में होने वाली परीक्षा में शामिल होते हैं।

* **कम्प्यूटर अकाउंटेंसी**

आजकल हर काम में कम्प्यूटर की मदद ली जा रही है। अकाउंटिंग के क्षेत्र में भी इसका खूब इस्तेमाल होने लगा है। यही वजह है कि अब कार्यालयों में पहले की तरह मोटे-मोटे बही-खाते नहीं दिखते, क्योंकि इनकी जगह कम्प्यूटर्स ने ले ली है। इसकी डिमांड इसी से समझी जा सकती है कि आज अकेले भारत में 10 लाख से अधिक अकाउंटिंग प्रोफशनल्स इस फील्ड से जुड़े हैं, जिसमें हर साल वृद्धि हो रही है। इस तरह के काम में निपुणता के लिए अकाउंटेंसी के बेसिक्स के साथ-साथ कम्प्यूटर ऑपरेशन की अच्छी जानकारी जरूरी है। इसके लिए बीकॉम या एमकॉम की कोई अनिवार्यता नहीं है, बल्कि आप चाहें, तो विभिन्न संस्थानों द्वारा चलाए जाने वाले ऐसे कोर्स में बारहवीं के बाद भी एडमिशन ले सकते हैं। इस तरह के कोर्स एक या डेढ़ साल की अवधि के होते हैं। इस कोर्स के तहत कॉमर्स, बैंकिंग, टैक्सेशन, टैक्स लॉ आदि की जानकारियों के साथ-साथ कम्प्यूटर एेप्लिकेशन, फाइनेंशियल अकाउंटिंग, एडवांस प्रैक्टिकल अकाउंट्स, टैक्सेशन, एक्साइज एंड सर्विस टैक्स, पे-रोल, इन्वेस्टमेंट, बैंकिंग एवं फाइनेंस से संबंधित हर तरह की जानकारी दी जाती है।

* **बैचलर ऑफ बिजनेस स्टडीज**

12वीं के बाद आप बीबीएस यानी बैचलर ऑफ बिजनेस स्टडीज एक अंडर ग्रेजुएट मैनेजमेंट प्रोग्राम है, में एडमिशन ले सकते हैं। यह कोर्स दिल्ली विश्वविद्यालय के तीन कॉलेजों में चलाया जाता है और इसके लिए ऑल इंडिया स्तर पर प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाती है। अन्य संस्थानों में यह बीबीए नाम से चल रहा है। दाखिले के लिए 12वीं में 60 फीसदी अंक जरूरी हैं। बीबीएस में दाखिले के लिए अंग्रेजी और गणित विषय भी अपेक्षित हैं

- **बैचलर ऑफ फाइनेंशियल एंड इंवेस्टमेंट एनालिसिस**

आप चाहें, तो 12वीं के बाद बीएफआईए यानी बैचलर ऑफ फाइनेंशियल एेंड इंवेस्टमेंट एनालिसिस फाइनेंस का एक स्पेशलाइज्ड कोर्स कर सकते हंै, जिसमें छात्रों को फाइनेंस के विभिन्न पहलुओं के बारे में बताया जाता है। इस कोर्स को बाजार के हिसाब से तैयार किया गया है। इस कोर्स को करने के बाद रोजगार की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

* **बैचलर ऑफ बिजनेस इकोनॉमिक्स**

बीबीई यानी बैचलर ऑफ बिजनेस इकोनॉमिक्स है। इस प्रोफेशन से जुड़े लोगों की मार्केट में अच्छी डिमांड है। दरअसल, यह बाजार के इस्तेमाल में आने वाले अर्थशास्त्र पर केन्द्रित कोर्स है। यह परंपरागत अर्थशास्त्र ऑनर्स से इस मायने में अलग है कि इसमें अर्थशास्त्र का इतिहास, उसका विकास और तरह-तरह के सिद्धांतों को नहीं पढ़ाया जाता। बीबीई में आट्र्स और साइंस के छात्र भी दाखिला ले सकते हैं, लेकिन कॉमर्स के स्टूडेंट्स के लिए यह ज्यादा बेहतर होता है।

* **बैचलर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन**

बीबीए यानी बैचलर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन अंडर ग्रेजुएट मैनेजमेंट प्रोग्राम है। इसमें स्टूडेंट्स को बीबीए जनरल से लेकर स्पेशलाइजेशन वाले कोर्स में दाखिले मिलेंगे। स्पेशलाइजेशन में कम्प्यूटर एडेड

मैनेजमेंट, बैंकिंग ऐंड इंश्योरेंस, टूर एंड ट्रैवल मैनेजमेंट, मॉडर्न ऑफिस मैनेजमेंट और इंटरनेशनल हॉस्पिटैलिटी आदि हैं। मसलन इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय में बीबीए और एमबीए में फाइनेंशियल मार्केट के अलावा, बीबीए जनरल, बीबीए इन बैंकिंग ऐंड इंश्योरेंस, कम्प्यूटर एडेड मैनेजमेंट, ट्रैवल एंड टूरिज्म मैनेजमेंट कोर्स भी चलाए जा रहे हैं। इसी तरह एमबीए का भी स्पेशलाइज्ड कोर्स है। शिक्षण संस्थानों में फाइनेंशियल मार्केट में स्नातक स्तर पर बीबीए और फाइनेंशियल मार्केट में एमबीए का भी कोर्स भी शुरू किया गया है। कोर्स में स्टॉक बाजार का माहौल किस तरह का है, किस तरह के प्रबंधन के बीच काम करने की जरूरत पड़ती है, फाइनेंशियल प्लानिंग किस तरह से की जाती है, इन तमाम बातों के बारे में बताया जाता है। कोर्स में दुनिया के अलग-अलग जगहों पर चलने वाले स्टॉक बाजार का प्रबंधन किस तरह का है, इससे भी वाकिफ कराया जाता है। स्टॉक एक्सचेंज की कार्यशैली कैसी है, वह किस तरह निवेशकों के बीच काम करता है, इसकी जानकारी दी जाती है। बीबीए में दाखिले के लिए 12वीं में 50 फीसदी अंकों के साथ पास होना अनिवार्य है। इसी तरह एमबीए में स्नातक 50 फीसदी अंकों के साथ पास होना चाहिए।

* **एमएचआरडी और एमआईबी**

दिल्ली विश्वविद्यालय में मास्टर ऑफ ह्यूमन रिसोर्स एंड ऑर्गनाइजेशनल डेवलपमेंट और मास्टर इन इंटरनेशनल बिजनेस में दाखिला एक पंथ दो काज का रास्ता दिखाता है। दाखिले के लिए स्टूडेंट्स को अलग-अलग परीक्षा की तैयारी नहीं करनी होती। दोनों कोर्स में एक ही प्रवेश परीक्षा, साक्षात्कार और समूह चर्चा के बाद दाखिला पाने का मौका मिलता है। कॉमर्स विभाग द्वारा प्रोफेशनल कोर्स के रूप में चलाए जा रहे इन कोर्सों में दाखिले के लिए हर साल फरवरी माह में विभिन्न बड़े शहरों में प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाती है। दोनों मास्टर कोर्स दो साल के हैं। यह एक ऐसा पीजी कोर्स है, जो स्टूडेंट्स को ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट ऐंड ऑर्गनाइजेशनल डेवलपमेंट के बारे में खास तौर पर प्रशिक्षित करता है। एमआईबी यानी मास्टर ऑफ इंटरनेशनल बिजनेस के जरिए स्टूडेंट्स को सिर्फ ग्लोबल बिजनेस की गति को पहचाने की क्षमता ही नहीं दी जाती, बल्कि उसकी समझ, विश्लेषण व कम्युनिकेशन स्किल भी पैदा की जाती है।

* **एमएफसी(मास्टर ऑफ फाइनेंस एंड कंट्रोल)**

यह वित्तीय योजनाएं तैयार करने और उनकी नीतियां बनाने में स्टूडेंट्स को विशेष तौर पर प्रशिक्षित करता है। इसके तहत उन्हें प्रबंधकीय नीति बनाने, खासकर ऑर्गनाइजेशनल व्यवहार, मैनेजेरियल अर्थशास्त्र, फाइनेंशियल अकाउंटिंग, फाइनेंशियल सर्विस, इंटरनेशनल फाइनेंस, इंटरनेशनल अकाउंटिंग, इंवेस्टमेंट मैनेजमेंट आदि के बारे में जानकारी प्रदान की जाती है।

* **मैटीरियल मैनेजमेंट**

यह कोर्स दिल्ली विश्वविद्यालय के कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज में चलाया जाता है। बीए वोकेशनल कोर्स के रूप में मैटीरियल मैनेजमेंट के तहत तीन अलग-अलग वर्षों में उसके विविध रूपों से रूबरू कराया जाता है। पहले साल में स्टूडेंट्स को किसी भी कंपनी में परचेजिंग व स्टोर मैनेजमेंट क्या है और यह काम किस तरह से होता है, इसके बारे में समझाया जाता है। इस कोर्स में 12वीं कक्षा के अंकों (बेस्ट फोर) के आधार पर दाखिला दिया जाता है। बीए वोकेशनल के तहत टूरिज्म, ऑफिस एेडमिनिस्ट्रेशन ऐंड सेक्रेटेरियल प्रैक्टिस,

मैनेजमेंट ऐंड मार्केटिंग, स्मॉल एंड मीडियम एंटरप्राइज, ह्यूमन रिसोर्स मैनजमेंट ऐंड मार्केटिंग मैनेजमेंट ऐंड रिटेल बिजनेस जैसे कोर्स भी चल रहे हैं। इन कोर्सेज में दाखिला बारहवीं की मेरिट के आधार पर मिलता है। दाखिला साइंस और आर्ट्स के स्टूडेंट्स भी ले सकते हैं, लेकिन यह कोर्स कॉमर्स के स्टूडेंट्स के लिए ज्यादा अच्छा है।

* **फाइनेंशियल सेक्टर**

वित्तीय मामलों में ज्यादातर आंकड़ों का खेल होता है। इसलिए एक अच्छा फाइनेंशियल एडवाइजर बनने के लिए जरूरी है कि आपको फाइनेंस की भाषा की अच्छी समझ हो। फाइनेंस के सेक्टर में हो रहे विकास के कारण आज इस क्षेत्र में करियर की काफी अच्छी संभावनाएं हैं। अपने ग्राहकों की वित्तीय स्थिति को सुधारने के लिए उपयोगी सलाह देने का काम फाइनेंशियल एडवाइजर करते हैं। इनका काम अपने ग्राहकों को निवेश, बीमा, बचत योजनाओं, कर्ज आदि के बारे में सही सलाह देना होता है। साथ ही यह भी सुनिश्चित करना होता है कि ग्राहकों को ज्यादा से ज्यादा मुनाफा और कम से कम नुकसान हो। फाइनेंस सेक्टर में करियर बनाने के लिए आप कैट एग्जाम के जरिए भारत के किसी भी अच्छे कॉलेज में एडमिशन ले सकते हैं। इस सेक्टर में उच्च शिक्षा के लिए किसी भी स्ट्रीम में बैचलर डिग्री का होना जरूरी है। वैसे, पहले केवल कॉमर्स के स्टूडेंट्स ही इस क्षेत्र में भविष्य बनाते थे, लेकिन इसके बढ़ते क्षेत्र को देखते हुए बीएससी (मैथ-बायो), बीए, बीबीए और बीई के छात्र भी एडमिशन ले सकते हैं। इस क्षेत्र में करियर बनाने के लिए आप चाहें तो एमबीए इन फाइनेंस, एमएस इन फाइनेंस, मास्टर डिग्री इन फाइनेंशियल इंजीनियरिंग, पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन फाइनेंस, मास्टर्स इन कमोडिटी एक्सचेंज आदि जैसे कोर्स कर सकते हैं।

जानकारी हेतु आप निम्नलिखित वेबसाइट को विजिट कर सकते है,

- http://www.icmai.in The Institute of Chartered Accountants of India
- www.ibps.in Institute of Banking Personal Selection
- http://www.nifm.ac.in National Institute of Financial Management (NIFM)
- http://www.iimahd.ernet.in Indian Institute of Management, Ahmedabad (IIMA)
- http://www.iimb.ernet.in Indian Institute of Management, Bangalore (IIMB)
- http://www.nchmct.org/ National Council for Hotel Management and Catering Technology
- http://www.insuranceinstituteofindia.com Insurance Institute of India - Offers courses
- http://www.iittmgwalior.org/ Indian Institute of Tourism and Travel Management, Gwalior
- http://www.nda.nic.in National Defense Academy
- http://www.iijnm.org/ Indian Institute of Journalism & New Media (IIJNM)
- http://www.soms.in/ School of Media Studies, Athani, Kakkanad, Kochi